खिलाफत कमिटी का गठन हुआ, प्रमुख नेता - मुहम्मद अली, शौकत अली, अबुल कलाम आजाद। 23 नवम्बर 1919 को दिल्ली में अखिल भारतीय खिलाफत कमिटी का अधिवेशन हुआ, जिसकी अध्यक्षता गाँधीजी ने की। गाँधीजी के कहने पर डॉ. अंसारी के नेतृत्व में एक शिष्टमंडल को इंग्लैण्ड भेजा गया। 1920 में एक शिष्टमंडल अलीबंधु के नेतृत्व में इंग्लैण्ड भेजा गया, किंतु इन दोनों दलों को असफलता हाथ लगी। 20 जून 1920 को इलाहाबाद में असहयोग के अस्त्र को अपनाये जाने का निर्णय किया गया। 31 अगस्त 1920 का दिन खिलाफत दिवस के रूप में मनाया गया। इस तरह लीग ने ब्रिटिश के विरूद्ध खिलाफत आंदोलन छेड़ा। बाद में तुर्की में कमालपाशा के नेतृत्व में बनी सरकार ने खलीफा के पद को समाप्त कर दिया। ऐसे में यह आंदोलन स्वतः समाप्त हो गया।

- खिलाफत आंदोलन के समय मालावार क्षेत्र में 1921 में मोपला विद्रोह हुआ। मोपला आर्थिक दृष्टि से निर्धन मुसलमान थे, जिनका शोषण नम्बुदरी जमींदार और नायर साहूकार किया करते थे। इस विद्रोह ने सांप्रदायिक रूप धारण कर लिया।

★ **असहयोग आंदोलन (1920-22) :-**

- गाँधी जी ने कांग्रेस को विश्वास दिलाया कि कांग्रेस भी पंजाब की गलती, खिलाफत ज्यादती और स्वराज के मुद्दे पर एक आंदोलन छेड़े। किंतु सी.आर. दास विधान पालिका के वहिष्कार के मुद्दे पर सहमत नहीं थे। मदनमोहन मालवीय और जिन्ना स्वराज के मुद्दे पर कुछ स्पष्ट व्याख्या चाहते थे। यानि प्रारंभ में सुरेन्द्रनाथ वनर्जी, मदनमोहन मालवीय, चितरंजन दास, विपिनचन्द्र पाल, मुहम्मद अली जिन्ना, शंकरन नायर, चन्द्रावरकर ने इस प्रस्ताव का विरोध किया, किंतु तमाम विरोधों पर नियंत्रण पाते हुए अलीबंधुओं तथा मोतीलाल नेहरू के समर्थन से कलकत्ता के विशेष अधिवेशन में गाँधीजी 1920 में असहयोग आंदोलन का प्रस्ताव पारित करवा लिया। दिसम्बर 1920 ई० के नागपुर नियमित सत्र में इस प्रस्ताव के दुबारा मंजूरी दे दी गई। एनीबेसेंट, जी.एस. खापर्डे, मुहम्मद अली जिन्ना, विपिनचन्द्र पाल, शंकर नायर इन लोगों ने कांग्रेस से इस्तीफा दे दिया।
- नागपुर अधिवेशन की एक उपलब्धि कांग्रेस का संरचनात्मक पुनर्संगठन था। ग्राम, तालुक और जिला स्तर पर कांग्रेस की समितियाँ बनाई गई। सबके शीर्ष पर अखिल भारतीय कांग्रेस समिति थी। कार्यकारिणी समिति में सदस्यों की संख्या 15 रखी गई और कांग्रेस की सदस्यता शुल्क 25 पैसा निर्धारित की गई।
- **कार्यक्रम :-** असहयोग आंदोलन के कार्यक्रम - सरकारी परिषदों का बहिष्कार, न्यायालय का वहिष्कार, विदेशी वस्त्रों का वहिष्कार और अगर जरूरत समझी गई तो सरकारी सेवा का बहिष्कार तथा सिविल नाफरमानी आंदोलन। कुछ रचनात्मक कार्यक्रम भी निर्धारित किए गए यथा राष्ट्रीय शिक्षा को प्रोत्साहन और छुआछूत की नीति का परित्याग, यथासंभव हिंदी का प्रयोग, भाषाई आधार पर प्रांतीय कांग्रेस समितियों का पुनर्गठन। लाला लाजपत राय स्कूलों के बहिष्कार के विरोधी थे, लेकिन मोतीलाल नेहरू के प्रयास से सम्पन्न समझौते में तय हुआ कि स्कूलों एवं अदालतों का वहिष्कार धीरे-धीरे किया जाए। गाँधीजी ने आश्वासन दिया कि यदि इन कार्यक्रमों पर पूरी तरह अमल हुआ तो एक वर्ष के भीतर आजादी मिल जायेगी।
- असहयोग आंदोलन 1 अगस्त 1920 को आरंभ किया। इस आंदोलन को हम चार चरणों में बाँट सकते हैं :-
  - **प्रथम चरण :-** (जनवरी 1921 से मार्च 1921), इसमें न्यायालय और सरकारी शिक्षण संस्थाओं का वहिष्कार किया गया। मोतीलाल नेहरू, तेजबहादुर सप्रू, चितरंजन दास, जवाहरलाल नेहरू, विट्ठलभाई पटेल, वल्लभभाई पटेल, राजेन्द्र प्रसाद, राजाजी, आसफ़

Scanned By KagazScanner

अली और सैफुद्दीन किचलू जैसे महत्वपूर्ण वकीलों ने अपने पेशे का परित्याग किया। गाँधीजी ने 'कैसर-ए-हिंद' की उपाधि त्याग दी। जमनालाल बजाज ने 'रायबहादुर' की उपाधि त्याग दी।

- **द्वितीय चरण :-** (अप्रैल 1921 से जुलाई 1921) इस चरण में तीन बातों पर विशेष बल दिया गया - चरखे का प्रचार, तिलक स्वराज फंड की स्थापना और राष्ट्रीय शिक्षा। इस चरण में सदस्यता में अभूतपूर्व वृद्धि हुई और देखते-देखते तिलक स्वराज फंड में 1 करोड़ रुपया जमा हो गया। विद्यार्थियों के अध्ययन के लिए काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ, गुजरात विद्यापीठ, बनारस विद्यापीठ, तिलक-महाराष्ट्र विद्यापीठ आदि स्थापित की गई। शिक्षण संस्थाओं का सर्वाधिक बहिष्कार बंगाल में हुआ। सुभाषचन्द्र बोस नेशनल कॉलेज कलकत्ता के प्रधानाचार्य बने। शिक्षा का बहिष्कार मद्रास में बिल्कुल असफल रहा।

- **तृतीय चरण :-** (जुलाई 1921 से नवम्बर 1921) इस चरण में आंदोलन थोड़ा सा उग्र हो गया, क्योंकि कांग्रेस नीचले स्तर पर दबाव महसुस कर रही थी। इस चरण में विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार पर बहुत बल दिया गया। क्षेत्रीय विस्तार और नीचले स्तर का दबाव संयुक्त प्रांत में किसानों के द्वारा एका आंदोलन चलाया गया। मिदनापुर के किसानों द्वारा यूनियन बोर्ड आंदोलन चलाने के परिणामस्वरूप बंगाल में प्रथम किसान संगठन का निर्माण हुआ। बिहार के छोटानागपुर क्षेत्र में जनजातीय लोगों में ताना‌भगत आंदोलन चला। केरल के मालाबार तट पर मोपला विद्रोह शुरू हो गया। नवम्बर 1921 ई. में बॉम्बे में प्रिंस ऑफ वेल्स का बहिष्कार किया गया। गाँधीजी ने अली बंधुओं की रिहाई न किए जाने के कारण प्रिंस ऑफ वेल्स के भारत आगमन का वहिष्कार किया। आंध्र के गुंटूर जिले में चिराला चिराला शहर में जब नगरपालिका कर बढ़ा दिया गया तो दुगालीराज कृष्णैया के नेतृत्व में इस प्रदेश के वाशिंदों ने शहर का परित्याग कर दिया और 11 महीनों तक अलग निवास करते रहे। 4 मार्च 1921 को ननकाना के गुरूद्वारे में सैनिकों द्वारा गोली चलाने से 70 लोगों की मौत हुयी। लॉर्ड रीडिंग के वायसराय बनने के बाद दमनचक्र में तेजी आयी। मुहम्मद अली पहले नेता थे, जिन्हें असहयोग आंदोलन में ग़िरफ्तार किया गया।

- **चतुर्थ चरण :-** (नवम्बर 1921 से फरवरी 1922) गाँधीजी ने घोषणा की थी कि एक वर्ष में स्वराज मिल जाएगा। फरवरी 1922 ई. में बारदोली तहसील में सिविल नाफरमानी आंदोलन चलाया जाना था। तभी 5 फरवरी 1922 ई. में देवरिया जिला (यू0पी0) के चौरी-चौरा नामक स्थान में एक क्रुद्ध भीड़ ने थाना में आग लगाकर 21 सिपाहियों की हत्या कर दी। अतः गाँधीजी ने अखिल भारतीय कांग्रेस समिति की बारदोली बैठक में 12 फरवरी 1922 ई. को इस आंदोलन को वापस ले लिया। मार्च 1922 ई. में गाँधी जी को गिरफ्तार कर लिया गया और जज ब्रूमफिल्ड के द्वारा उन्हें 6 वर्षों की सजा दी गई। किंतु स्वास्थ्य के आधार पर उन्हें 1924 ई. में रिहा कर दिया गया।

- असहयोग आंदोलन के स्थगन पर मोतीलाल नेहरू ने कहा कि "यदि कन्याकुमारी के एक गाँव ने अहिंसा का पालन नहीं किया, तो इसकी सजा हिमालय के एक गाँव को क्यों मिलनी चाहिए।" सुभाषचन्द्र बोस ने कहा कि "ठीक इस समय जबकि जनता का उत्साह चरम पर था, वापस लौटने का आदेश देना राष्ट्रीय दुर्भाग्य से कम नहीं।"
- असहयोग के बाद :- सविनय अवज्ञा जाँच समिति की स्थापना हुई। इसके सदस्यों में अंसारी,

Scanned By KagazScanner

राजगोपालचारी, कस्तूरी रंगा आयंगर गाँवों में गाँधीवादी रचनात्मक कार्य करने के पक्ष में थे। वहीं मोतीलाल नेहरू विट्ठलभाई पटेल और हकीम अजमल खाँ का कहना था कि बदली हुई परिस्थितियों में कांग्रेस चुनाव में भाग ले। एक गुट स्वराजिस्टों का था जिसके नेता चितरंजनदास, मोतीलाल नेहरू और विट्ठलभाई पटेल थे, तो दूसरे गुट अपरिवर्तनवादियों का था जिसमें राजेन्द्र प्रसाद, वल्लभभाई पटेल और चक्रवर्ती राजगोपालाचारी थे। कांग्रेस के विशेष दिल्ली अधिवेशन (सितंबर 1923) में यह समझौता किया गया कि कांग्रेस चुनाव में खड़े हो सकती है। जून 1924 ई. में अखिल भारतीय कांग्रेस समिति के अहमदाबाद अधिवेशन में गाँधीजी के द्वारा यह निर्धारित किया गया कि कांग्रेस की सदस्यता के लिए कताई की न्यूनतम योग्यता बनाई जाए। फिर 1926 के वर्ष को गाँधीजी ने मौन वर्ष घोषित किया।

★ **स्वराज पार्टी** :-

- चितरंजन दास ने इस्तीफा देकर **कांग्रेस खिलाफत स्वराज पार्टी** का गठन किया। सी.आर. दास उसके अध्यक्ष और मोतीलाल नेहरू उसके सचिव बने। इस पार्टी के उद्देश्य :- 1) जल्दी से जल्दी डोमेनियन स्टेटस प्राप्त करना 2) पूर्ण प्रांतीय स्वायत्तता 3) सरकारी कार्यों में बाधा उत्पन्न करना।
- 1923 ई. के चुनाव में स्वराज पार्टी ने भाग लिया। इसमें इस दल को सफलता मिली। संघीय केन्द्रीय परिषद् के 101 में से 42 स्थान प्राप्त हुए और यह पार्टी विट्ठलभाई पटेल को अध्यक्ष के पद पर निर्वाचित करवाने में सफल रहीं। बंगाल में इसे स्पष्ट बहुमत मिला। मध्यप्रदेश में यह सबसे बड़ी पार्टी के रूप में उभरी और संयुक्त प्रांत एवं असम में यह दूसरी बड़ी पार्टी बनी।
- 1924-26 के मध्य स्वराज दल ने बजट को अस्वीकृत कर सरकारी अधिनियम का विरोध किया। 1924 में 'ली कमीशन' जिसकी स्थापना सरकारी नौकरियों में जातीय उच्चता को बनाए रखने के लिए की गई थी, स्वराजियों ने उसे स्वीकृत नहीं होने दिया। इसी तरह द्वैध शासन संबंधी विवादों के जाँच के लिए गठित 'मुडीमैन समिति' का भी विरोध किया। 1925 ई. में सी.आर. दास की मृत्यु हो गई, जिससे इस दल को गहरा धक्का लगा, दूसरी तरफ कांग्रेस का दूसरा खेमा कुछ अन्य प्रकार की गतिविधियों में व्यस्त था। ऐसी परिस्थिति में 1926 के चुनाव में पार्टी को आशा के अनुकूल सफलता नहीं मिली और 1926 के अंत तक इस पार्टी का अंत हो गया।
- इसी काल में पंजाब, नागपुर, वरसाड और वैकम का सत्याग्रह हुआ।

★ **गुरू का बाग सत्याग्रह** :- पंजाब में गुरू का बाग सत्याग्रह, अगस्त 1922 से 1923 का आरंभ एक छोटी सी बात को लेकर आरंभ हुआ था। अंग्रेजों के दबाव में नाभा के महाराज रिपुदमन सिंह को, जो अकाली आंदोलन के प्रमुख संरक्षक थे, गद्दी छोड़नी पड़ी। जैतों में एक सत्याग्रह हुआ। थोड़े समय के लिए जवाहरलाल नेहरू भी इसमें सम्मिलित थे। पंजाब का नया कार्यकुशल गवर्नर मैलकॉम हैली 1925 में सिक्ख गुरूद्वारा एण्ड साइंस एक्ट द्वारा अकाली विवाद को समाप्त करने में सफल रहा। 1924 में भी एक ऐसे ही मुद्दे को लेकर एक भ्रष्ट महंत के विरूद्ध तारकेश्वर आंदोलन चलाया गया, जिसे स्वामी विश्वानंद ने प्रारंभ किया और बाद में सी.आर. दास ने इस मुद्दे को उठाया।

★ **झण्डा सत्याग्रह** :- नागपुर के कुछ क्षेत्रों में कांग्रेसी झण्डें के प्रयोग पर लगाए गए प्रतिबंधों के विरूद्ध स्थानीय प्रतिरोध करने के लिए 1923 के मध्य झण्डा सत्याग्रह हुआ।

★ **वरसाड आंदोलन (1923-24)** :- वल्लभभाई पटेल के वरसाड सत्याग्रह को हार्डीमन ने ग्रामीण गुजरात में पहला सफल गाँधीवादी सत्याग्रह कहा है। सितंबर 1923 में वरसाड के प्रत्येक व्यस्क

Scanned By KagazScanner

पर 2 रूपया 7 आने का कर लगाया गया। कहा गया है कि यह कर इस लिए लगाया जा रहा था कि डकैतियों के कहर दबाने के लिए पुलिस की व्यवस्था की जा सके। दिसंबर तक आंदोलन ने ऐसा रूप धारण कर लिया कि सभी 104 प्रभावित गाँवों ने नए कर की अदायगी न करने का निर्णय लिया। अंततः 7 फरवरी 1924 को सरकार ने कर रद्द कर दिया।

★ **वैंकम सत्याग्रह (1924-25) :-** यह मंदिर प्रवेश का पहला आंदोलन था। यह आंदोलन निम्न जातीय इझवाओं और अछूत द्वारा गाँधीवादी तरीके से त्रावणकोर के एक मंदिर के निकट की सड़कों के उपयोग के बारे में अपने अधिकारों को मनवाने का प्रयास था। इसका नेतृत्व इझवा कांग्रेसी नेता टी.के. माधवन, के.के. केलप्पन तथा के.पी. केशव मेनन कर रहे थे। मार्च 1925 में गाँधीजी वैंकम गय, किंतु 20 महीने के पश्चात् आंदोलन कमजोर पड़ गया, क्योंकि सरकार ने अछूतों के लिए अलग सड़क का निर्माण कराया।

★ **क्रांतिकारी आतंकवाद का दूसरा चरण :-**

- असहयोग आंदोलन की असफलता ने युवकों को फिर से आतंकवाद की ओर मोड़ दिया। पंजाब, संयुक्त प्रांत और लाहौर में फिर से एक बार आतंकवाद का लहर आया। 1923-24 में गोपीनाथ शाहा ने एक ब्रिटिश अधिकारी 'डे' की हत्या कर दी। संयुक्त प्रांत में दो महत्वपूर्ण आतंकवादी प्रकाश में आये - सचिन सान्याल और योगेशचन्द्र चटर्जी। सचिन सान्याल ने हिन्दुस्तान रिपब्लिक आर्मी की स्थापना की। सचिन सान्याल ने चन्द्रशेखर आजाद की मदद से 'हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन' की स्थापना की। एक महत्वपूर्ण आतंकवादी घटना 1925 में काकोरी ट्रेन डकैती थी। इस घटना की प्रतिक्रिया में रामप्रसाद बिस्मिल, रोशन सिंह, अस्फाक उल्ला खाँ और राजेन्द्र लाहरी को मृत्युदंड दे दिया गया तथा सचीन्द्र बख्शी को आजीवन करावास दिया गया।
- 1925 ई. में सचिन सान्याल ने एक पैम्पलेट प्रकाशित किया जिसमें यह घोषित किया गया कि नए तारों को जन्म लेने के लिए उथल-पुथल आवश्यक है।
- पंजाब में क्रांतिकारियों ने 'नौजवान भारत सभा' की स्थापना की। उसी से जुड़े हुए एक व्यक्ति थे- भगत सिंह। 1928 में दिल्ली के फिरोजशाह कोटला में क्रांतिकारियों की एक बैठक हुई जिसमें भगत सिंह, यतिन्द्रनाथ, अजयघोष और फणीन्द्रनाथ घोष भी विशेष सक्रिय थे। चन्द्रशेखर आजाद के परामर्श से हिन्दुस्तान रिपब्लिक एसोसिएशन का नाम बदलकर 'हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' कर दिया गया। भगत सिंह एक नास्तिकतावादी समाजवादी थे। उन्होंने एक निबंध प्रकाशित किया कि मैं नास्तिक क्यों हूँ। उन्होंने घोषणा की कि मैं बम और पिस्तौल के संप्रदाय में विश्वास नहीं करता, मैं पूरी व्यवस्था को बदलना चाहता हूँ।
- 8 अप्रैल 1929 को केन्द्रीय विधान परिषद् में Trade Dispute Bill तथा Public Safety Bill पारित किया जा रहा था तो भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त ने एसेंबली में बम फेंका और वहाँ कुछ पैम्पलेट विखेर दिए। उनका उद्देश्य था कि अपनी विचारधारा का प्रसार। उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया और लाहौर षड्यंत्र मुकदमें के तहत सुखदेव, राजगुरू और भगत सिंह को 23 मार्च 1931 को फाँसी दे दी गई।
- दिसंबर 1929 ई. में जतीनदास ने भूख हड़ताल कर दी। उनकी मांग थी कि उनपर साधारण अपराधी की तरह मुकदमें न चलाकर स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने वाले राजनैतिक कैदी की तरह मुकदमा चलाया जाए। अंत में उनकी मृत्यु हो गई किंतु उन्होंने भूख हड़ताल नहीं छोड़ी।
- फरवरी 1931 ई. में चन्द्रशेखर आजाद एक मुठभेड़ में मारे गए और 1933 ई. तक चटगाँव

Scanned By KagazScanner

- अब उस समय का इंतजार किया जाने लगा कि पूर्ण स्वराज के प्रश्न पर सविनय अवज्ञा आंदोलन कब छेड़ा जाए।

★ **गाँधीजी द्वारा प्रस्तुत 11 सूत्री मांग** :- गाँधीजी ने जनवरी 1930 ई. में तात्कालिक वायसराय लॉर्ड इरविन के समक्ष 11 सूत्री मांगे रखीं। प्रमुख मांगे :- 1) रूपये का पुनर्मूल्यन विनिमय दर में कमी 1 शिलिंग 4 पेंस हो 2) भू-राजस्व आधा किया जाए 3) मद्यनिषेध लागू हो 4) नमक कर समाप्त हो 5) सैनिक व्यय में 50 प्रतिशत की कमी हो 6) अधिक वेतन पाने वाले अधिकारियों की संख्या में कमी हो 7) विदेशी कपड़े पर विशेष आयात कर लगाया जाए 8) तटकर विधेयक लाया जाए 9) सभी राजनीतिक बंदी छोड़े जाएँ 10) गुप्तचर विभाग समाप्त किया जाए 11) भारतीयों को आत्मरक्षा के लिए हथियार रखने का अधिकार प्रदान किया जाए।

- गाँधीजी ने कहा कि यदि 12 मार्च 1930 तक ये मांगे स्वीकार नहीं की गई तो वे नमक कानून का उल्लंघन करेंगे। जब इरविन ने इसका प्रतिउत्तर नहीं दिया तो गाँधीजी ने सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ करने का निश्चय किया।

★ **सविनय अवज्ञा आंदोलन** :-

- 14 फरवरी 1930 को साबरमती में कांग्रेस की एक बैठक में गाँधीजी के नेतृत्व में सविनय अवज्ञा आंदोलन चलाने का निश्चय किया गया। यह आंदोलन शुरू करने से पहले गाँधीजी वायसराय से बात करना चाहते थे, किंतु वायसराय ने ध्यान नहीं दिया। तब गाँधीजी ने कहा था कि "कांग्रेस ने रोटी की मांग की और उसे मिला पत्थर।"
- आंदोलन के कार्यक्रम :- 1) नमक कानून का उल्लंघन कर स्वयं नमक बनाया जाए 2) सरकारी सेवा, अदालत, शिक्षा केन्द्र एवं उपाधियों का बहिष्कार किया जाए 3) महिलाएँ स्वयं शराब, अफीम एवं विदेशी कपड़ा की दुकानों पर जाकर धरना दें 4) समस्त विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार कर उसे जला दिया जाए 5) कर अदायगी को रोका जाए।

★ **दांडी यात्रा** :-

12 मार्च 1930
- 12 मार्च 1930 ई. को अपने 78 अनुयायियों के साथ गाँधीजी ने साबरमती आश्रम से गुजरात तट तक (358 किमी) की यात्रा की और 6 अप्रैल 1930 को दाण्डी नामक स्थान पर एक मुट्ठी नमक हाथ में लेकर नमक कानून का उल्लंघन किया और इसी के साथ सविनय अवज्ञा आंदोलन प्रारंभ हुआ।
- इस आंदोलन का फैलाव संपूर्ण भारत में हो गया। दक्षिण भारत में राजगोपालाचारी त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम तक की यात्रा कर नमक कानून का उल्लंघन किया। अप्रैल में इन्हें गिरफ्तार कर लिया गया, किंतु तब तक दक्षिण भारत में सत्याग्रहियों के बहुत बड़े जत्थे तैयार हो चुके थे।

त्रिचनापल्ली से वेदारण्यम

- असम में भी यह आंदोलन फैल गया और वहाँ भी नमक कानून का उल्लंघन हुआ। यहाँ लोगों ने सिलहट से नोआखाली तक की यात्रा की।
- के. केलप्पन एवं टी.के. माधवन ने कालीकट से पयानूर तक की यात्रा की।
- बंबई में इस आंदोलन का केन्द्र धरसाना था, जहाँ पर सरकार के दमन चक्र का सबसे भयानक रूप देखने को मिला। सरोजनी नायडू, इमाम साहब और मणिलाल के नेतृत्व में लगभग 25 हजार स्वयंसेवकों को धरसाना नमक कारखाने पर धावा बोलने से पूर्व लाठियों से पीटा गया। इस घटना का उल्लेख अमेरिका के न्यू फ्रीमैन अखबार के पत्रकार मिलर ने किया।

मिलर ने धरसाना का उल्लेख किया

- रैय्यतवाड़ी क्षेत्रों में काम रोको आंदोलन और जमींदारी क्षेत्रों में चौकीदारी रोको आंदोलन चलाया

Scanned By KagazScanner

चटगांव → पेशावर → शोलापुर

गया। जब बंगाल में मॉनसून आ गया तो नमक बनाना कठिन हो गया। अतः वहाँ यूनियन बोर्ड आंदोलन प्रारंभ हो गया। बिहार के सारण, मुंगेर और भागलपुर जिला में चौकीदारी कर रोको आंदोलन तीव्र हो गया। मुंगेर में बरही नामक स्थान पर सरकार का शासन समाप्त हो गया। आंध्र, कर्नाटक और मध्य भारत में वन कानूनों का उल्लंघन हुआ।

- सविनय अवज्ञा आंदोलन के समय ही लड़कियों में मांजेरी सेना तथा बच्चों ने बानर सेना का गठन किया। इसके बाद विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार और नशीली वस्तुओं की दुकानों पर धरना विद्रोह का महत्वपूर्ण हथकंडा हो गया।
- सुभाषचंद्र बोस ने दांडी यात्रा के बारे में लिखा कि "महात्मा जी के दांडी मार्च की तुलना इल्बा से लौटने पर नेपोलियन के पेरिस मार्च और राजनैतिक सत्ता प्राप्त करने के लिए मुसोलिनी के रोम मार्च से की जा सकती है।"
- इस आंदोलन की तीन महत्वपूर्ण घटनाएँ हैं - चटगाँव, शोलापुर एवं पेशावर की घटनाएँ।
- 18 अप्रैल 1930 को बंगाल के सूर्य सेन ने चटगाँव शस्त्रागार पर कब्जा कर लिया। इसी के साथ बंगाल में क्रांतिकारी आतंकवाद में पुनः तीव्रता आ गई। इस घटना में दो महिला आतंकवादी कल्पना दत्त और प्रीतिलता वाडेकर शामिल थीं। इस विद्रोह का दमन कर दिया गया।
- उत्तर-पश्चिम सीमाप्रांत में खान अब्दुल गफ्फार खाँ (सीमांत गाँधी) के नेतृत्व में खुदाई खिदमतगार संगठन के सदस्यों ने सरकार का विरोध किया। गफ्फार खाँ ने 'लाल कुर्ती' दल का गठन किया। इस दल ने गफ्फार खाँ को 'फख्रे अफगान' की उपाधि दी। उन्होंने पश्तो भाषा में पख्तून नामक एक पत्रिका निकाली, जो बाद में 'दशरोजा' नाम से प्रकाशित हुई। गफ्फार खाँ को बादशाह खाँ के नाम से भी जाना जाता था। इस आंदोलन के समय उत्तर-पश्चिमी सीमाप्रांत के कबायली ने गाँधीजी को मलंग बाबा कहा। 23 अप्रैल 1930 को जब बादशाह खान अर्थात् अब्दुल गफ्फार खाँ या सीमांत गाँधी को गिरफ्तार कर लिया गया तो पेशावर में हिंसा भड़क उठी। पेशावर में गढ़वाल राइफल्स के सैनिकों ने चन्द्रसिंह गढ़वाली के अनुरोध पर सविनय अवज्ञा आंदोलनकारियों पर गोली चलाने से इंकार कर दिया।

उसी तरह 7 मई 1930 को शोलापुर के मील मजदूरों ने ब्रिटिश अधिकारी पर हमला बोल दिया, जिसके कारण हिंसा भड़क उठी।

छोटानागपुर का आदिवासी क्षेत्र भी अशांत हो गया। यहाँ बोगा माँझी और सोमरा माँझी हजारीबाग आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे।

- असम में शिक्षा पर कॅनिंघम सर्कुलर के विरूद्ध जोरदार प्रतिक्रिया हुई और आंदोलन में तीव्रता आ गई। मणिपुर में भी इस आंदोलन ने जोर पकड़ा। नागाओं ने जदोनांग के नेतृत्व में जियालरांग आंदोलन चलाया। जदोनांग के बाद इस आंदोलन को गैडिन्ल्यू ने चलाया।
- विदेशी वस्त्रों का बहिष्कार सबसे अधिक बंगाल, बिहार और उड़ीसा में सफल रहा। सविनय अवज्ञा आंदोलन की यह विशिष्टता थी कि इसमें व्यवसायिक वर्ग ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। जमनालाल बजाज कांग्रेस के सक्रिय सदस्य रहे और 1930 ई. में जेल भी गए। भारतीय उद्योगपतियों और व्यापारियों की सबसे बड़ी शिकायत पौंड-रूपया विनिमय प्रणाली थी। आंदोलन अपनी पराकाष्ठा पर पहुँच चुका था। गाँधीजी किसी प्रकार का समझौता करने कि लिए राजी नहीं थे।
- 5 मई 1930 को गाँधीजी को गिरफ्तार कर लिया गया। एक महीने के अंदर 1 लाख लोगों को

Scanned By KagazScanner